रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज
डुमराँव बक्सर

प्रगतिवाद :-

छायावाद के गर्भ से 1930 ई. के बाद नवीन सामाजिक चेतना से युक्त जिस साहित्य-धारा का जन्म हुआ उसे सन् 1936 में प्रगतिशील साहित्य अथवा प्रगतिवाद की संज्ञा दी गयी।

नामवर सिंह के अनुसार कुछ लोग प्रगतिवाद और प्रगतिशील साहित्य में भेद करते हैं। उनके अनुसार मार्क्सवादी सौन्दर्य-शास्त्र का नाम प्रगतिवाद है और आदिकाल से लेकर अब तक की समस्त साहित्य-परंपरा प्रगतिशील साहित्य है।

दूसरी ओर, ऐसे भी हैं जो मार्क्सवादी साहित्य-सिद्धांत तथा इस सिद्धांत के अनुसार रचे हुए साहित्य को प्रगतिवाद कहना चाहते हैं और छायावाद के बाद की व्यापक सामाजिक चेतनावाले समस्त साहित्य को 'प्रगतिशील साहित्य' कहते हैं जिसमें विभिन्न राजनीतिक मतों के बावजूद एक सामान्य मानवतावादी भावना व्याप्त है। इस तरह ये प्रगतिवाद को संकीर्ण और सांप्रदायिक बतलाते हैं तथा प्रगतिशील साहित्य को व्यापक और उदार। उनके अनुसार प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा निर्धारित और प्रचलित साहित्य प्रगतिवाद है और बाकी प्रगतिशील साहित्य।

नामवर सिंह लिखते हैं 'जिस तरह छायावाद और छायावादी कविता भिन्न नहीं है उसी तरह प्रगतिवाद और प्रगतिशील साहित्य भी भिन्न नहीं हैं। 'वाद' की अपेक्षा 'शील' को अधिक अच्छा और उदार समझकर इन दोनों में भेद करना कोरा बुद्धि-विलास

है और कुछ लोगों की इस मान्यता के पीछे प्रगतिशील साहित्य का प्रच्छन्न विरोध भाव छिपा है।"

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार "प्रगतिवाद की आत्मा साम्यवाद में थी, दृष्टि रूस के साहित्यिक इतिहास की ओर थी, प्रेरणा राजनीतिक मंतव्यों द्वारा अनुशासित थी और कल्पना प्रोलेतेरिएत सत्ताशाही से अनुप्राणित थी। उसकी खोज उस नए मानव की थी जो समस्त पतनशील प्रवृत्तियों के विरोध में उपर्युक्त स्थापनाओं को विकसित करके एक प्रोलेतेरियत शासन सत्ता को उभारने का अवसर दे"

प्रगतिशील लेखकों ने अपनी विचारधारात्मक प्रेरणा मार्क्सवाद से ग्रहण की। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के बाद हिन्दी - उर्दू के ही नहीं, बल्कि दूसरी भाषाओं के भी अधिकांश परिवर्तनकामी लेखक इसके साथ जुड़े, क्योंकि उन्हें यह महसूस हो रहा था कि देश को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कराने के लिए और दुनिया को फासीवादी के खतरे से बचाने के लिए उन्हें भी संगठित होना चाहिए जिस तरह मजदूर, किसान और विद्यार्थी संगठित हो रहे थे।

सन 1935 में कुछ भारतीय लेखकों और बुद्धिजीवियों ने लंदन में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की जिसका पहला अधिवेशन लखनऊ में 1936 में हुआ। इसी अवसर पर अखिल भारतीय किसान सभा का अधिवेशन भी आयोजित किया गया था। प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के प्रयासों से हिन्दी और उर्दू के प्रगतिशील लेखक ही

नहीं थे बल्कि उन्हें रवीन्द्रनाथ टैगोर, जवाहर लाल नेहरू, आचार्य नरेंद्रदेव और जयप्रकाश नारायण आदि के सहयोग का आश्वासन भी प्राप्त हो गया था।

सभापति के रूप में प्रेमचंद ने इस सम्मेलन में दिये अपने भाषण में रूढ़िवाद, व्यक्तिवाद, संकीर्ण सौंदर्य-दृष्टि और अलंकारवाद पर प्रहार करते हुए साहित्यकारों का आह्वान किया कि वे सक्रीय और जीवंत साहित्य की रचना करें, भाषा को सहज बनायें और एक नये सामाजिक यथार्थवाद को अपनायें। इस अवसर पर जारी किये गये घोषणापत्र में प्रगतिशील लेखकों का आह्वान किया गया था कि वे प्रगतिशील लेखकों की संस्थाएं संगठित करें और साहित्य द्वारा अपने उद्देश्यों का प्रचार करें,

प्रगतिशील लेखक संघ का दूसरा सम्मेलन 1938 में कलकत्ता में हुआ। इसका सभापति रवीन्द्रनाथ ठाकुर को बनाया गया। हालांकि बीमारी के कारण वे सम्मेलन में उपस्थित न हो सके। प्रगतिवाद के सामाजिक यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण कविता में जितना परिवर्तन हुआ, उतना कहानी- उपन्यास के क्षेत्र में नहीं हुआ। इसका कारण है कि प्रेमचंद के युग से ही उपन्यास में यथार्थवादी प्रवृत्ति का उदय हो गया था। अपनी कहानियों और उपन्यासों में प्रेमचंद ने शुरु से ही, किसानों और मध्यवर्गीय भद्र - पुरुषों का, यथार्थ जीवन का चित्रण किया था। प्रेमचंद के ही समय किस तरह परिस्थिति वश किसान, मजदूर बनने के लिए विवश हो गया था, इसे भी उन्होंने गोदान में अच्छी

तरह लिख दिया था।

कविता, कहानी, उपन्यास इत्यादि के क्षेत्र में प्रगतिशील लेखकों ने जिस सामाजिक यथार्थवादी दृष्टि से रचना-कार्य किया, उसे आलोचना के क्षेत्र में भी उसी तरह भरपूर सम्मान मिला। प्रगतिवादी विचारों से युक्त प्रतिभाशाली आलोचकों का एक तेजस्वी समूह उभर कर आया जिसने प्रगतिवादी साहित्य का समुचित मूल्यांकन किया। प्रगतिवाद ने आलोचना के मान स्थिर किये और उन मानदंडों के अनुसार समूची साहित्य-परंपरा का मूल्यांकन किया।

कविता, कहानी, उपन्यास और आलोचना में प्रगतिवाद की जिस प्रकार अभिव्यंजना हुई है उसे देखते हुए छायावाद के बाद की यह सर्वप्रमुख साहित्य धारा के रूप में स्वीकृत है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)